प्रतिभागी

इस परिसंवाद में इतिहास, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान, लोक साहित्य तथा पर्यावरण अध्ययन से जुड़े विद्वान और सांस्कृतिक अध्ययन के विशेषज्ञ व स्थानीय बुद्धिजीवी, समाजसेवी और सांस्कृतिक कार्यकर्ता, शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी आमंत्रित रहेंगे।

आयोजन का प्रारूप

शोध-पत्र वाचन, विशेष व्याख्यान, पैनल चर्चा और संवाद सत्र

शोध पत्र सम्बन्धी आवश्यक तिथियां

लघु शोध पत्र प्राप्त	: 20 अक्तूबर, 2025
विस्तृत शोध पत्र प्राप्ति	: 02 नवम्बर, 2025

पंजीकरण शुल्क

शोध पत्र लेखक विद्वान	: रु. 700.00
शोधार्थी	: रु. 300.00

बैंक खाता विवरण

खाता नाम : ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
खाता संख्या : 11500210001851
यूको बैंक, हमीरपुर (हि.प्र.)
आईएफएससी कोड : **UCBA0001150**
UPI-ID : 11500210001851@ucobank

आवश्यक सूचना

प्रतिभागी विद्वानों तथा शोधकर्त्ताओं के आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाएगी तथा स्थानीय यातायात की व्यवस्था शोध संस्थान आवश्यकतानुसार उपलब्ध करवाएगा।

शोध पत्रों का प्रकाशन

शोध संस्थान परिसंवाद के चयनित मूल और उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्रों को (हिंदी और अंग्रेजी) प्रकाशित करेगा। लेख आदर्श रूप से उचित संदर्भों और टिप्पणियों के साथ 3000–5000 के बीच लिखे जाने चाहिए। हिंदी में शोध पत्रों का फॉन्ट Kruti dev 010, आकार 12 और अंग्रेजी के लिए Times New Roman आकार 12 में होना चाहिए। सार और शोध पत्रों को seminarneri@gmail.com पर ईमेल भेज सकते हैं।

पत्राचार पता :
ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी
जिला हमीरपुर (हि.प्र.)-177001
दूरभाष : +91–7018113630, 01972–262905
E-mail : seminarneri@gmail.com

मार्गदर्शक मण्डल

प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति
प्रो. भाग चन्द चौहान, अध्यक्ष, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर
प्रो. दिलबाग सिंह, सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
डॉ. चेतराम गर्ग, निदेशक, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर
डॉ. सूरत ठाकुर, अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन योजना, हिमाचल प्रान्त
प्रो. ललित कुमार अवस्थी, कुलपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय मण्डी (हि.प्र.)
डॉ. योगेन्द्र यादव, निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, शिमला (हि.प्र.)
श्री पृथी पाल सिंह, अध्यक्ष, नालन्दा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, झनियारी, हमीरपुर (हि.प्र.)
प्रो. नारायण सिंह राव, निदेशक, बृहद इतिहास प्रकल्प एवं सीनियर फैलो, प्रधानमंत्री संग्रहालय
प्रो. ओम प्रकाश शर्मा, टैगोर फैलो, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला (हि.प्र.)
डॉ. ओम दत्त सरोच, निदेशक पुराणान्तर्गत इतिहास, शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)
प्रो. सतीश भारद्वाज, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग, डॉ. वाई.एस.परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन (हि.प्र.)

आयोजन समिति

- श्री भूमिदत्त शर्मा
- डॉ. जगवीर चंदेल
- श्री नरेश शर्मा
- श्री देशराज शर्मा
- श्री प्रवीण भट्टी
- श्री संजीव जम्बाल
- श्री राकेश शर्मा
- डॉ. विकास शर्मा
- प्रो. कंवर चन्द्रदीप सिंह
- डॉ. अंकुश भारद्वाज
- डॉ. शिव भारद्वाज
- श्री बारू राम ठाकुर
- डॉ. कर्म सिंह
- डॉ. राजेन्द्र शर्मा
- डॉ. ऋषि भारद्वाज
- डॉ. रामपाल

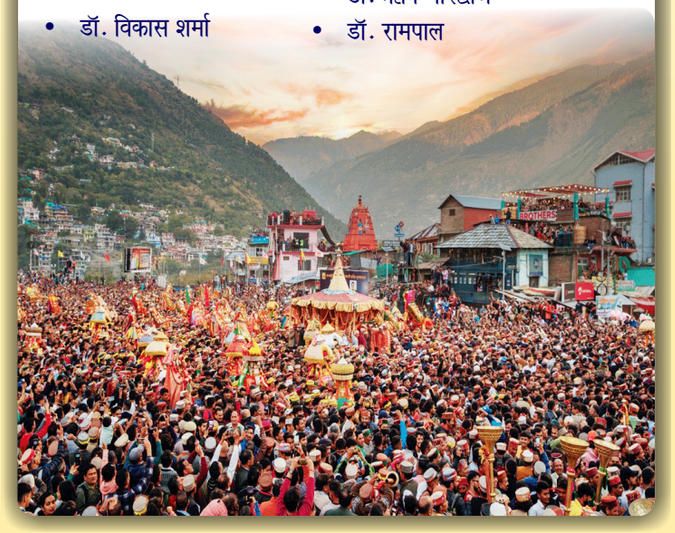

ॐ
नामूलं लिख्यते किञ्चित्

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय परिसंवाद

हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना : निरंतरता और परिवर्तन

कलि. 5127, वि.सं. 2082, मार्गशीर्ष कृष्ण 03-05
(08-09 नवम्बर, 2025)

सहभागी

इतिहास विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मण्डी (हि.प्र.)
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केन्द्र, शिमला (हि.प्र.)
नालंदा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, झनियारी, हमीरपुर (हि.प्र.)

परिसंवाद स्थल

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी
जिला हमीरपुर (हि.प्र.)-177001
ई-मेल : seminarneri@gmail.com

संयोजक
डॉ. राकेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मण्डी (हि.प्र.)
दूरभाष : +91-7018113630

आयोजन सचिव
डॉ. बिन्दू साहनी
गांव व डाकघर अम्बोटा,
तह. अम्ब, जिला ऊना (हि.प्र.)
दूरभाष : +91-7018019543

प्रो. अनिल कुमार
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय देहरी,कांगड़ा (हि.प्र.)
दूरभाष : +91-8894158906

राष्ट्रीय परिसंवाद

हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना : निरंतरता और परिवर्तन

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला केन्द्र से 10 कि.मी. पश्चिम की ओर शिवालिक की सुरम्य घाटी में कुनाह खड्ड (नदी) के तट पर नेरी गांव में स्थित है। शोध संस्थान अपनी शोध यात्रा में भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध पक्षों पर कार्य करता रहा है। वर्तमान में संस्थान भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली (आई.सी.एच.आर.), शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से एक शोध परियोजना, 'हिमाचल प्रदेश का बृहद इतिहास' पर शोधपरक कार्य कर रहा है, जो क्षेत्रीय इतिहास लेखन में मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस संस्थान के संस्थापक ठाकुर रामसिंह इतिहास के महान चिन्तक, अध्येता एवं दूरद्रष्टा थे। उन्ही के भागीरथ प्रयासों एवं कर्मणता के परिणाम स्वरूप संस्थान देश-विदेश से शोधकर्ताओं की कर्मस्थली बनता जा रहा है। शोध संस्थान में शोधकर्ताओं के लिए समृद्ध पुस्तकालय, वाचनालय, अभिलेखागार, अतिथि गृह तथा इंटरनेट आदि सुविधाएं उपलब्ध है।

भूमिका

हिमाचल प्रदेश भौगोलिक विविधता, समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं से निर्मित एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का परिचायक है, जिसमें निरंतरता और परिवर्तन दोनों ही समानांतर रूप से दिखाई देते हैं। यहाँ की सामाजिक सरंचना न केवल स्थानीय पारंपरिक मूल्यों और रीतियों से निर्मित रही है बल्कि समय-समय पर हुए राजनीतिक परिवर्तनों, आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक बदलाव और वैश्विक संपर्कों से भी प्रभावित रही है । पारंपरिक समाज में परिवार, समुदाय और लोक परंपराएँ सामाजिक जीवन के केंद्र रहे हैं। यहाँ की जातीय विविधता, गोत्रीय संबंध, लोक-रीतियाँ, देव-परंपरा, त्यौहार व मेले और सामुदायिक सहयोग की भावना ने समाज को लंबे समय तक स्थिरता और निरंतरता प्रदान की है। समय के साथ शिक्षा, संचार, प्रवासन, वैश्वीकरण और आधुनिक विचारधाराओं आदि ने समाज की संरचना में परिवर्तन लाया है तथा स्थापित व्यवस्थाओं को नई चुनौतियाँ भी दी हैं। जातिगत सीमाएँ अपेक्षाकृत शिथिल हुईं, महिलाओं और युवाओं की भूमिका अधिक सशक्त होकर सामने आई और पारंपरिक सामुदायिक जीवन में भी नए मूल्य जुड़ते रहे हैं ।

अतः हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना पर यह विमर्श न केवल लोक-परंपराओं को समझने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि वर्तमान परिवर्तनों और भविष्य की संभावनाओं को भी उद्घाटित करता है। परंपरा और आधुनिकता के बीच यह संवाद हिमाचल की सामाजिक पहचान को निरंतर नया स्वरूप देता है।

परिसंवाद के उद्देश्य

1. हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना, परंपराओं, व्यवस्थाओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक विरासत को गहराई से समझना तथा उनका मूल्यांकन करना है कि इन परंपराओं ने समाज को कैसे आकार दिया है।
2. यह विमर्श करना है कि समय के साथ समाज में क्या बदलाव आए तथा इन बदलावों के कारणों और प्रभावों पर मंथन होना भी अपेक्षित रहेगा।
3. परिसंवाद का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना को ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समझना है कि किस प्रकार सामाजिक संस्थाएँ आज भी निरंतरता बनाए हुए हैं।
4. यहाँ हम यह जानने का भी प्रयास करेंगे कि किस प्रकार परंपराएँ और आधुनिक विचारधाराएँ एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाती हैं और समाज को किस तरह से प्रभावित करती हैं।

इस तरह यह विमर्श परिसंवाद की प्रासंगिकता को पुष्ट करेगा तथा इन उद्देश्यों के माध्यम से हम एक समग्र दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।

परिसंवाद के उप-विषय

1. पारंपरिक सामाजिक संरचना
2. परिवार, विवाह प्रणाली एवं गोत्रीय व्यवस्था
3. जातीय और पेशागत संरचनाएँ
4. देव संस्कृति एवं देव संस्थान
5. लोक परंपराएँ एवं रीति-रिवाज
6. सामाजिक सरंचना की रक्तवाहिनियां : लोकभाषा, लोकगीत और लोककथाएँ
7. लोकसंस्कृति और सामाजिक एकता : मेले, त्यौहार और सामूहिक जीवन।
8. परिवार और समुदाय में महिलाओं की स्थिति : निरंतरता और परिवर्तन
9. परम्परा के संरक्षण और परिवर्तन में युवाओं की भूमिका
10. शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार माध्यमों का प्रभाव
11. वैश्वीकरण, प्रवासन व आधुनिकता का प्रभाव
12. सामाजिक संरचना के संरक्षण में शैक्षिक संस्थाओं की भूमिका

परिसंवाद की प्रासंगिकता

यह परिसंवाद हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना को अकादमिक दृष्टि से समझने का अवसर प्रदान करेगा। क्योंकि यह हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना में परंपराओं की निरंतरता और परिवर्तनों को समझने का अवसर देता है। इससे समाज में हो रहे सांस्कृतिक, शैक्षिक और सामाजिक बदलावों की गहरी पड़ताल होगी, जो समकालीन सामाजिक अध्ययन और नीति-निर्माण के लिए उपयोगी है। साथ ही समाज की विशिष्ट परम्पराओं और चुनौतियों पर भी प्रकाश डालेगा।